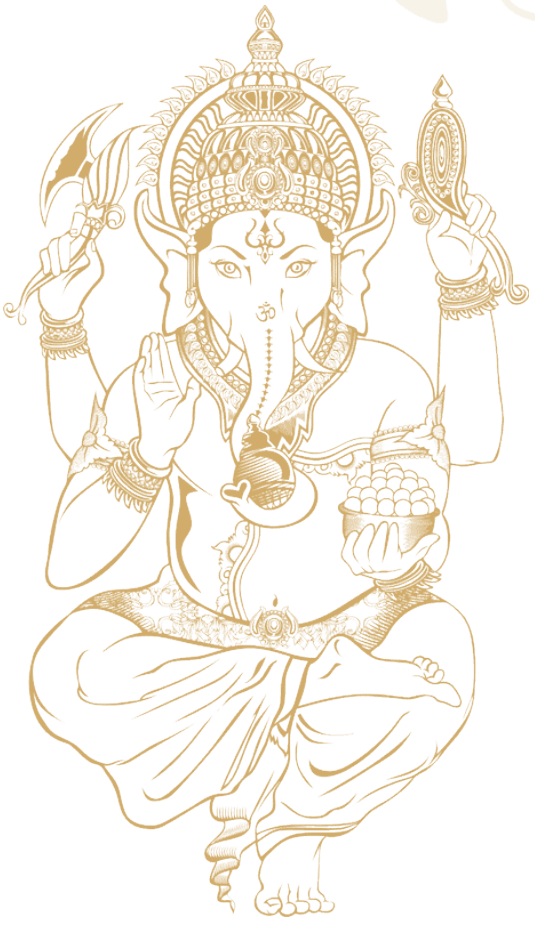

Bhishm Kho

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121593903

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
3-04/11/1997	जन्म तिथि	25/11/1998
सोम-मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 05:30:00	जन्म समय	19:04:00 घंटे
घटी 58:37:10	जन्म समय(घटी)	31:52:24 घटी
India	देश	India
Bettiah	स्थान	Motihari
26:49:00 उत्तर	अक्षांश	26:40:00 उत्तर
84:30:00 पूर्व	रेखांश	84:55:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:08:00	स्थानिक संस्कार	00:09:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:03:07	सूर्योदय	06:17:05
17:07:14	सूर्यास्त	16:57:23
23:49:31	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:19

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 0वर्ष 9मा 12दि	09:39:12	तुला	लग्न	मिथु	10:57:44	चन्द्र 1वर्ष 4मा 1दि
सूर्य	17:46:46	तुला	सूर्य	वृश्चि	09:14:11	गुरु
17/08/2025	29:23:04	वृश्चि	चंद्र	मक	21:33:02	28/03/2025
18/08/2031	02:15:26	धनु	मंगल	कन्या	05:06:58	28/03/2041
सूर्य 05/12/2025	00:34:24	वृश्चि	बुध व	वृश्चि	22:18:20	गुरु 16/05/2027
चन्द्र 05/06/2026	19:26:05	मक	गुरु	कुंभ	24:34:17	शनि 26/11/2029
मंगल 11/10/2026	04:47:23	धनु	शुक्र	वृश्चि	15:48:45	बुध 03/03/2032
राहु 05/09/2027	21:13:50	मीन व	शनि व	मेष	03:57:19	केतु 07/02/2033
गुरु 23/06/2028	24:22:44	सिंह व	राहु व	सिंह	02:02:20	शुक्र 09/10/2035
शनि 05/06/2029	24:22:44	कुंभ व	केतु व	कुंभ	02:02:20	सूर्य 27/07/2036
बुध 12/04/2030	11:05:26	मक	हर्ष	मक	15:34:04	चन्द्र 26/11/2037
केतु 17/08/2030	03:32:30	मक	नेप	मक	06:06:01	मंगल 02/11/2038
शुक्र 18/08/2031	10:43:53	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	13:53:38	राहु 28/03/2041

लग्न-चलित

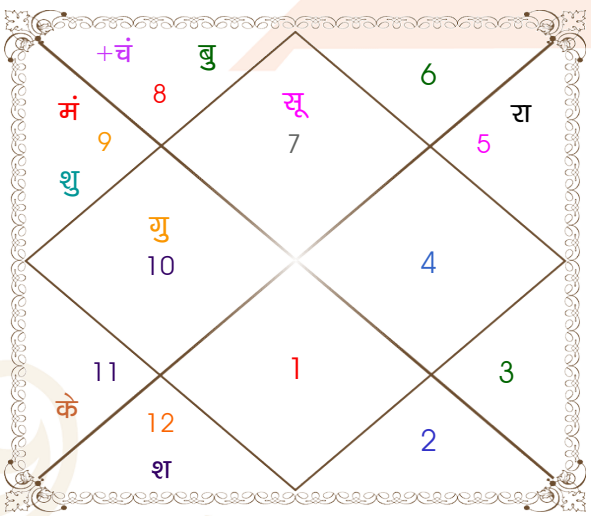

लग्न-चलित

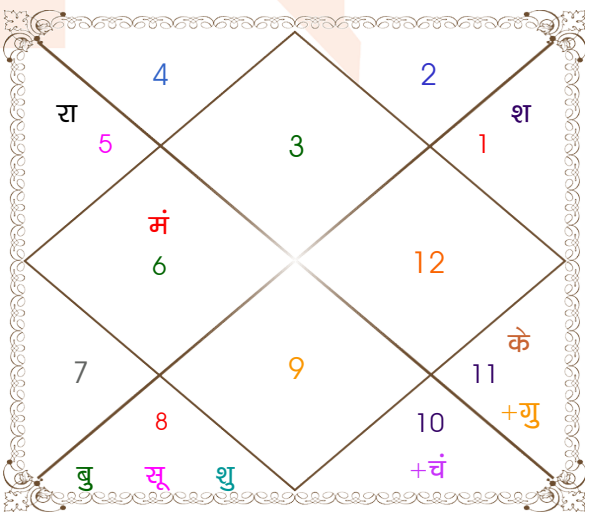

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.00		

Bhishm का वर्ग मृग है तथा Kho का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Bhishm और Kho का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

Bhishm मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Kho मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Bhishm कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Bhishm तथा Kho में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।